समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मई २०१५ • वर्ष ६६ • अंक ०५

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

श्री मधुसूदन सीकरिया
निर्वाचित अध्यक्ष
पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

नेपाल में भूकम्प : सम्मेलन ने बढ़ाया मदद का हाथ

कोलकाता स्थित नेपाल के कंसुल जनरल श्री चन्द्र कुमार बिमिरे को भूकम्प-पीड़ितों के लिए राहत सामग्री सौंपते सम्मेलन के अध्यक्ष रामअवतार पोद्दार, पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष प्रह्लाद राय अगरवाला, महामंत्री शिव कुमार लोहिया, पूर्व महामंत्री संतोष सराफ एवं अन्य।

नवीनीकरण-सौन्दर्यीकरण के बाद केन्द्रीय सम्मेलन कार्यालय — (उपर) १९३५ से अब तक के राष्ट्रीय अध्यक्षों के चित्र; आधुनिक सुविधाओं-सहित कार्यस्थल; (बॉक्स में) समाज विकास के पूरे भारत में प्रेषण हेतु नवस्थापित फ्रैंकिंग मशीन।

RUPA®
Frontline
PREMIUM INNERWEAR
YEH AARAM KA
MAMLA HAI!
www.rupa.co.in | follow 'rupaknitwear' on YouTube | SMS 'RUPA' to 53456 | Toll Free No. 1800 1235 001

समाज विकास

◆ मई २०१५ ◆ वर्ष ६६ ◆ अंक ०५ ◆ एक प्रति - ₹ १० ◆ वार्षिक - ₹ १००

अनुक्रमणिका

शीर्षक			*पृष्ठ संख्या*
सम्पादकीय : एक साल, मोदी सरकार	–	*सीताराम शर्मा*	५
अध्यक्षीय : भावी कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण	–	*रामअवतार पोद्दार*	७
केन्द्रीय / प्रान्तीय समाचार			८-१५
लेख : हम भी कभी बूढ़े होंगे!	–	*शिव कुमार लोहिया*	१६-१७
कविता : बेटी	–	*बृजमोहन बेरीवाला*	१७
लेख : 'लिव इन रिलेशन' अर्थात् 'यूज एण्ड थ्रो रिलेशन'	–	*प्रो. डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत*	१८-१९
लेख : एक ही छत के नीचे हो अब सब धर्मों की प्रार्थना	–	*डॉ. जगदीश गांधी*	२०-२१
पुस्तक समीक्षा :			२२

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

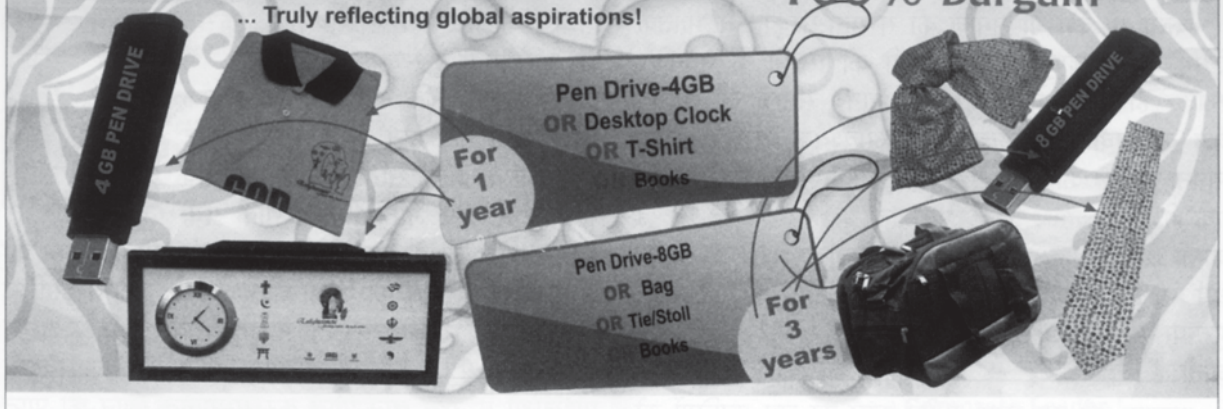

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

सम्पादकीय

एक साल, मोदी सरकार : बड़ी सफलताएँ, लेकिन पहाड़-सी ऊँची उम्मीदें

– सीताराम शर्मा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वह नेता हैं जो आधा खाली गिलास भी पूरा भरा देखते हैं, यह कहते हुए कि आधे गिलास में हवा भरी है। ऐसे आशावादी नेता को लोगों की अपार आशाएँ एवं आकांक्षाएँ भयभीत नहीं करतीं।

एक अनुभवहीन मंत्रिमंडल के साथ अव्यावहारिक नीतियों की दीवाल को तोड़ना, सरकारी तंत्र के स्टील-फ्रेम को हिलाते हुए सोच में परिवर्तन करना और लकवाग्रस्त सरकारी मशीनरी को चालू करना ही एक वर्ष के कार्यकाल में अपने आप में एक चुनौती थी। **इस संदर्भ में सबसे बड़ी उपलब्धि रही है कि यह दिख रहा है कि सरकार कुछ काम कर रही है और बहुत कुछ करना चाहती है।**

जन-धन योजना के अन्तर्गत १५ करोड़ बैंक खाते खोलना सरकार की गति दर्शाता है। वहीं कोयले और स्पेक्ट्रम की नीलामी से ५ लाख १० हजार करोड़ रुपये की कमाई कर सरकार ने पारदर्शी नीति का सबूत दिया है। आर्थिक सुधारों के क्षेत्र में सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं – बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश, डीजल की कीमत को मुक्त करना, कोयला और आयरन ओर की खुली खनन की नीति, आदि।

आम आदमी की याद्दाश्त छोटी होती है और अखबारों की तो उससे भी छोटी। **लोग भूलते नजर आ रहे हैं कि साल भर पहले क्या नजारा था — केन्द्रीय सरकार गहरी निद्रा में सो रही थी, चारों तरफ घोटालों की खबर थी, और नीतियों को तो जैसे लकवा मार गया था।** नकारात्मकता और निराशा का माहौल था। दुनिया की नजरो में भारत एक 'बास्केट केस' बन गया था। **एक साल में ही मोदी सरकार ने देश में चमात्कारिक उत्साह, जोश और आशा जगाई है। दुनिया अब भारत को विकास की सीढ़ी पर दौड़ते हुए एक देश के रूप में देख रही है।**

लोगों में इतनी ऊँची आशाएँ हैं कि वह सरकार को कुछ समय में ही बहुत कुछ करते देखना चाहते हैं, वे आर्थिक सुधारों की रफ्तार को तेज देखना चाहते हैं। **गत एक वर्ष में मोदी ने १८ देशों का दौरा किया है – यह सभी दौरे मोदी की आर्थिक तरक्की की बड़ी तस्वीर का हिस्सा हैं। विदेशनीति में अपनी कूटनीति के माध्यम से मोदी विकसित एवं विकासशील देशों में भारत की एक नयी छवि प्रस्तुत कर तकनीक एवं निवेश आकर्षित करना चाहते हैं।**

हम सभी जानते हैं कि भारत एक कठिन देश है – जहाँ शीघ्र बदलाव संभव नहीं है। जहाँ सरकारी तंत्र सत्ता से चिपकते हुए किसी भी बदलाव का विरोध करता है। किसी भी परिवर्तन के लिये सर्जरी की आवश्यकता होती है, होमियोपेथी काम नहीं करता।

मोदी के अश्वमेघ के घोड़े को राज्यसभा रोकती दिखती है। भूमि अधिग्रहण बिल भाजपा एवं गैर-भाजपा दलों के बीच एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन कर खड़ा हो गया है। संसद प्रायः ठप्प है। यह भी सच्चाई है कि भूमि अधिग्रहण बिल पर भाजपा में भी विचारभिन्नता है और साथ-साथ आर.एस.एस. भी बहुत उत्सुक एवं उत्साहित नहीं है। आर.एस.एस. मोदी सरकार की पूँजीवादी तस्वीर से खुश नहीं है। गणतंत्र मे गरीब-विरोधी दिखना हाराकिरी के समान है। **सालाना पर्व में सरकार का सबसे बड़ा प्रयास मोदी सरकार को गरीबों की एवं गरीबों के लिये प्रतिष्ठित करने का होगा।**

मोदी सरकार के सामने एक अन्य जो सबसे बड़ी चुनौती है वह राजनैतिक मैनेजमेंट की है। सभी गैर-भाजपा दलों का अन्ध-विरोध मोदी सरकार के लिये महँगा पड़ रहा है। **इस संदर्भ में मोदी को देर-सबेर क्षेत्रीय दलों के साथ लेन-देन के आधार पर समझौते की नीति को अपनाना पड़ेगा। राज्यसभा की नाव को पार करने की यही एकमात्र नीति है।** इसी नीति के माध्यम से तीनों महिला नेताओं – तमिलनाडु की जयललिता, पश्चिम बंग की ममता बनर्जी और उत्तर प्रदेश की मायावती के सहयोग का आश्वासन संभव है।

कार्यकाल का दूसरा वर्ष मोदी के लिये बड़ा महत्वपूर्ण एवं निर्णायक साबित हो सकता है। बिहार की हार मोदी की बीजेपी पर पकड़ को कमजोर कर सकती है एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मोदी सरकार को असीमित समर्थन को भी सीमित कर सकती है। सरकार एवं दल में मोदी विरोधियों को भी न तो नजरअंदाज किया जा सकता है न ही उनकी 'डेमेज वेल्यू' को कम आँका जाना चाहिये। अरूण शौरी का बयान इसका ताजा उदाहरण है। इन सबके बावजूद मोदी का जन-समर्थन अभी भी बरकरार है जो जनता का मोदी में भरोसे का परिचायक है। ★ ★ ★

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

अध्यक्षीय

भावी कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण

– रामअवतार पोद्दार

मातृशक्ति, युवाशक्ति, भाइयों,

राम-राम, राधे-राधे!

जैसा आप सब जानते हैं आजकल नरेन्द्र मोदी सरकार के एक वर्ष पूरे होने का मुद्दा मीडिया में सबसे ज्वलंत मुद्दा है। वर्तमान सरकार ने अत्यंत अल्प अवधि में ही विभिन्न क्षेत्रों में अनेक उल्लेखनीय कदम उठाये हैं। चाहे भ्रष्टाचार-निरोध और पारदर्शिता की बात हो, या कार्यक्रमों को गति देने की, सरकार गतिशील दिख रही है और इसके प्रारंभिक कदम उत्साहवर्धक रहे हैं। पाकिस्तान को छोड़कर, विदेशनीति एवं कूटनीति में सरकार की उपलब्धियाँ सराहनीय हैं। इससे निवेश को बल मिलेगा और आर्थिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। संक्षेप में, मोदी सरकार का पहला साल संतोषजनक रहा है।

जून महीने में ही २७-२८ को पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन उत्तरी लखीमपुर में, ४-५ जुलाई को झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन राँची में, और ११-१२ जुलाई को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन भागलपुर में आयोजित है। प्रांतीय अधिवेशन संगठन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो प्रांतीय इकाई एवं उसकी शाखाओं के क्रियाकलापों को गति देने के साथ-साथ विचार-मंथन हेतु महाकुंभ की भूमिका भी निभाते हैं।

अपने संगठन के मुद्दे पर आते हुए, निकट भविष्य में अपने कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। आगामी १४ जून २०१५ को झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में राँची में सम्मेलन के सर्वोच्च नीति-निर्धारक मंडल 'अखिल भारतीय समिति' की बैठक आयोजित की गयी है जिसमें कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श एवं निर्णय होंगे। जून महीने में ही २७-२८ को पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन उत्तरी लखीमपुर में, ४-५ जुलाई को झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन राँची में, और ११-१२ जुलाई को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन भागलपुर में आयोजित है। प्रांतीय अधिवेशन संगठन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो प्रांतीय इकाई एवं उसकी शाखाओं के क्रियाकलापों को गति देने के साथ-साथ विचार-मंथन हेतु महाकुंभ की भूमिका भी निभाते हैं।

मैंने अपने पदभार ग्रहण के बाद जिन विषयों को प्राथमिकता दी है, उनमें सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' की प्रति पूरे देश में फैले हमारे हरेक सदस्य को भेजना भी सम्मिलित है। जैसा आप जानते हैं, इस विषय पर अच्छी प्रगति हुयी है और जनवरी २०१५ से पत्रिका की प्रति प्रत्येक सदस्य को भेजी जा रही है। किन्तु इसमें कुछ कठिनाइयाँ आयी हैं जिनमें मुख्य है – डाक-तार विभाग द्वारा उनलोगों की प्रतियाँ अस्वीकार करना जिनके पते पूरे नहीं है या पिन-कोड नहीं है। 'समाज विकास' सम्मेलन के लिए संवाद का एक निर्विकल्प माध्यम है और आवश्यक है कि उसकी प्रति हरेक सदस्य तक पहुँचे, यह सुनिश्चित की जाय। इस संबंध में प्रविष्टियाँ प्रकाशित की गयी हैं और मेरा भी अनुरोध है कि हर स्तर से कदम उठाकर पतों में कमी को पूरा किया जाए। इसमें आप सब का सहयोग वांछित है।

जय समाज, जय राष्ट्र! ★★★

मधुसूदन सीकरिया बने पूर्वोत्तर सम्मेलन के निर्विरोध अध्यक्ष

श्री मधुसूदन सीकरिया सत्र २०१५-१७ के लिए पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए हैं। इस आशय की सूचना चुनाव अधिकारी श्री राजकुमार तिवाड़ी (पार्षद) ने दी है।

चुनाव अधिकारी ने बताया है कि मार्च २०१५ के प्रथम सप्ताह में पूर्वोत्तर प्रांत के सभी शाखाओं को इस बाबत अधिसूचना जारी कर प्रांतीय अध्यक्ष हेतु नाम प्रस्तावित करने का आग्रह किया गया था। नियत समय की समाप्ति तक एकमात्र श्री मधुसूदन सीकरिया के नाम का ही प्रस्ताव प्राप्त हुआ और उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। श्री सीकरिया २७-२८ जून २०१५ को उत्तर लखीमपुर में आयोजित पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के १४वें अधिवेशन में पदभार ग्रहण करेंगे।

श्री मधुसूदन सीकरिया सम्मेलन की एक बैठक को संबोधित करते हुए (फाईल फोटो)।

मधुसूदन सीकरिया : संक्षिप्त जीवन परिचय

गुवाहाटी के वयोवृद्ध समाजबंधु श्री सीताराम सीकरिया के तृतीय पुत्र श्री मधुसूदन सीकरिया का जन्म १४ जनवरी १९६३ को हुआ। अपनी प्रारंभिक शिक्षा पिलानी (राजस्थान) से ग्रहण करने के बाद वे गुवाहाटी के प्राग कॉलेज से बी. कॉम तक की पढ़ाई कर अपने पैतृक व्यवसाय में लग गये।

सामाजिक कार्यों में आपकी रूचि बचपन से ही रही है। आपने मारवाड़ी युवा मंच को लगातार २५ वर्षों अपनी सक्रिय सेवाएँ प्रदान की हैं। आपने मारवाड़ी युवा मंच में वर्ष १९८८ में शाखा मंत्री, १९८९ में शाखा कार्यकारी अध्यक्ष, १९९० में शाखा अध्यक्ष, १९९२-९५ में प्रांतीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, १९९६-१९९९ में प्रांतीय उपाध्यक्ष, १९९९-२००२ में प्रांतीय अध्यक्ष तथा २००३-२००५ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद के दायित्व को भली-भांति निभाया है। वर्ष २०१३ में गुवाहाटी में संपन्न हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन के आप स्वागत मंत्री थे। वर्तमान में आप सम्मेलन की पूर्वोत्तर प्रातीय इकाई के प्रांतीय महामंत्री का दायित्व निभा रहे हैं। गुवाहाटी की प्रमुख व्यवसायी संस्था केएनएस मर्चेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष तथा बृहत्तर फैंसी बाजार साहित्य सभा के कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी भी आप निभा रहे हैं।

संगीत में भी आपकी विशेष रूचि है। आपने सितारवादन के क्षेत्र में अनेकों बार अपनी शिक्षण संस्थान का प्रतिनिधित्व किया है। खेल-कूद के क्षेत्र में भी आपने अपनी पहचान स्थापित की है। हॉकी खेल में आपने पढ़ाई के दौरान झुंझनू (राजस्थान) तथा कामरूप (असम) का प्रतिनिधित्व किया। एथलेटिक्स खेलों की अनेकों प्रतियोगिताओं में भी आप बिजयी रहे हैं।

सन् १९८७ में सदिया (असम) की रंजना (मोदी) सीकरिया के साथ परिणयसूत्र में बँधे श्री मधुसूदन सीकरिया के दो सुपुत्र मयंक और रौनक हैं।

हर स्तर से सक्रियता बढ़ाना आवश्यक : रामअवतार पोद्दार

"अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के क्रिया-कलापों को और गति देने के लिए शाखा, जिला, प्रांत, हरेक स्तर से सक्रियता और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है।" ये विचार हैं सम्मेलन के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार** के जो उन्होंने २३ मई २०१५ को केन्द्रीय सम्मेलन के कार्यालय (१५२बी - द्वितीय तल, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता) में आयोजित सम्मेलन की राष्ट्रीय स्थायी समिति की बैठक में व्यक्त किए।

श्री रामअवतार पोद्दार

श्री रामअवतार पोद्दार ने अपने स्वागत-संबोधन में सम्मेलन के हालिया गतिविधियों के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए एकल सदस्यता के प्रावधानों के पूर्णरूपेण क्रियान्वयन, शाखा-सभाओं और प्रांतीय इकाइयों की सक्रियता बढ़ाने और इसके लिए हर स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कुछ प्रान्तीय इकाइयों की सक्रियता में कमी के कारण सम्मेलन के सदस्य कई सुविधाओं एवं अधिकारों से वंचित रह जाते हैं।

बैठक में राष्ट्रीय स्थायी समिति की गत बैठक (२० दिसम्बर २०१४; कोलकाता) की कार्यवाही पारित की गयी। **राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया** ने पिछली बैठक के बाद के सम्मेलन के क्रिया-कलापों पर रपट प्रस्तुत की। **राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री संजय हरलालका** ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रांतीय दौरों और संगठन-संबंधी अन्य विषयों पर रपट प्रस्तुत की।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अपने संबोधन में कहा, "सर्वप्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार और उनकी पूरी टीम को केन्द्रीय कार्यालप की मरम्मत और सौन्दर्यीकरण के लिए बधाई देना चाहूँगा। कार्यालय व्यवस्थित होने से सुचारू एवं प्रभावी ढंग से कार्य हो सकेगा।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' की प्रति सम्मेलन के प्रत्येक सदस्य को भेजी जा रही है। लगभग दस हजार लोगों को समाज विकास भेजना एक बड़ी उपलब्धि है। तथापि समाज विकास को आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है और मैं सभी से उसमें यथासम्भव योगदान का अनुरोध करता हूँ।

एकल सदस्यता के क्रियान्वयन में आनेवाली कठिनाइयों के बावजूद अच्छी प्रगति हुई है। इस तरह के कामों में समय लगता है। प्रांतों को भी सोचना चाहिए कि एकल सदस्यता के क्रियान्वयन के अभाव में उनके सदस्यों को कई सुविधाओं और अधिकारों से वंचित होना पड़ता है।"

बैठक में सर्वश्री संतोष सराफ, ओम लड़िया, विश्वनाथ सराफ, जगदीश पाटोदिया, गोविन्द अग्रवाल एवं संदीप सेकसरिया ने भी अपने विचार रखे।

अंत में राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया और सभा संपन्न हुई। ★★★

बैठक में विचार-विमर्श।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

2 Yrs. **PGDM** ₹ 1,00,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

2 Yrs. # **MBA** + **PGDM** ₹ 1,70,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

3 Yrs. # **BBA** ₹ 75,000

2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000

3 Yrs. # **BCA** ₹ 75,000

2 Yrs. **MBA (Hospital Mgmnt.)** ₹ 95,000

DUAL SPECIALISATION AVAILABLE

ELIGIBILITY & SELECTION FOR MBA/PGDM

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE WITH 50% SCORE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- APTITUDE TEST
- APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

Assistance for placement

- Eminent Faculty
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- Hostel
- AC Classrooms
- P G Accommodation

Complimentary Courses

- Spoken English
- Foreign Languages
- Bengali & Sanskrit
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development
- Theology

Other Courses :

- Company Secretaryship
- Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Retail Management
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit, Bengali and Hindi
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course on Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Vocational & Technical Training
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance
- Certificate course on theology

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : (033) 2290 0338

सम्मेलन की ओर से नेपाल भूकम्प पीड़ितों को सहयोग

विगत २५ अप्रैल २०१५ को नेपाल मे विनाशकारी भूकम्प से लाखों लोग बेघर हो गये। जान-माल की व्यापक नुकसान की खबरों के मध्य सम्मेलन की ओर से नेपाल के नगरिकों को राहत पहुँचाने की पहल की गई। सर्वश्री श्याम सुंदर बेरीवाल, नंदलाल रूँगटा, प्रह्लाद राय अग्रवाल, रामअवतार पोद्दार, सीताराम शर्मा एवं अन्य ने इस राहत कार्य के लिए अपना आर्थिक योगदान करने की सहमति प्रदान की।

फलस्वरूप नेपाल के कन्सुल जनरल (कलकत्ता स्थित) श्री चन्द्र कुमार घिमिरे से सम्पर्क स्थापित करने पर यह विदित हुआ कि तिरपाल एवं कम्वल की आवश्यकता मुख्य है। तथापि १००० तिरपाल, २७०० कम्बल, २० बोरा सूखा चिड़वा, कपड़े, बिस्कुट आदि की व्यवस्था कर ३ मई २०१५ को नेपाल कन्सुल जनरल को उनके बताए स्थान पर सौंप दिया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, श्री रमेश बुबना, श्री संजय पोद्दार, हावड़ा शाखा के अध्यक्ष श्री संजय भालोटिया आदि उपस्थित थे। श्री घिमिरे ने तत्काल राहत सामग्री प्रदान करने पर सम्मेलन का आभार प्रगट किया। ★★★

कलकाता में नेपाल के कंसुल जनरल श्री चन्द्र कुमार घिमिरे के साथ सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, उपाध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, पूर्व महामंत्री श्री सन्तोष सराफ एवं अन्य।

सम्मेलन द्वारा प्रदत्त राहत-सामग्री

बिहार सम्मेलन का महिला उद्यमी रत्न सम्मान समारोह

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा दिनांक ०३ मई २०१५ को पटना स्थित सम्मेलन के सभागार में महिला उद्यमी रत्न सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

सम्मान समारोह का उद्घाटन संयुक्त रूप से डॉ. रंजू गीता, मंत्री गन्ना उद्योग विभाग, बिहार सरकार; श्री ललन सर्राफ, विधान पार्षद एवं सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पवन कुमार सुरेका द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

सम्मान समारोह में सर्वश्रीमती शकुन्तला मोदी, (डॉ.) नीना अग्रवाल, उषा पोद्दार, मधुलिका अग्रवाल, इन्दु अग्रवाल, अंजू शर्मा, रेणु कुमारी पोद्दार, नीलम मस्करा, मंजू खण्डेलवाल, राजकुमारी सरावगी, मीरा देवी एवं सुनिता केडिया को अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मान चिह्न, सम्मान पत्र, शाल एवं पुष्प-गुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित महिला उद्यमी रत्न सम्मान समारोह म डॉ. रंजू गीता, मंत्री, बिहार सरकार, श्री ललन सर्राफ, विधान पार्षद, बिहार सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पवन कुमार सुरेका आदि महिला उद्यमी रत्न से सम्मानित महिलाओं के साथ।

सम्मान समारोह के स्वागत संबोधन में प्रादेशिक अध्यक्ष श्री पवन कुमार सुरेका ने सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि आज समाज की महिलाएँ विभिन्न व्यवसायों में अपनी सफलता के परचम लहरा रही हैं और अपनी योग्यता के बल पर वे आज समाज में अपनी अलग पहचान कायम करने में सफल हो पाई हैं। बिहार सम्मेलन के महामंत्री श्री बासु सर्राफ ने अपने प्रतिवेदन में सम्मेलन द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में सभा को बताया।

कार्यक्रम का संचालन अंजनी कुमार सुरेका ने किया। कार्यक्रम संयोजक श्री रमेश कुमार सुरेका ने कहा कि श्री कमल नोपानी, श्री रंदीप झुनझुनवाला आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सम्मेलन के वरीय उपाध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र गुप्ता ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

यह कार्यक्रम गायत्री-गोती लाल सुरेका स्मृति समिति द्वारा प्रायोजित था। ★ ★ ★

महिलाओं की स्थिति में सुधार के बिना विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं; किसी भी पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।

– स्वामी विवेकानंद

राजस्थानी भाषा को मान्यता हेतु दिल्ली में धरना-प्रदर्शन

राजस्थानी भाषा को सांवैधानिक मान्यता देने और उसे आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग को लेकर ६ मई २०१५ को दिल्ली स्थित जंतर-मंतर पर एक विशाल धरना व प्रदर्शन का आयोजन किया गया। धरने में पूरे राष्ट्र से विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

आयोजन में राष्ट्र की विभिन्न संस्थाओं यथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, राजस्थानी प्रचारिणी सभा, अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन आदि के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर राजस्थानी भाषा को सांवैधानिक मान्यता देने एवं उसे आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग की।

धरने-प्रदर्शन के दौरान अपने कार्यकर्ताओं को निर्देशन देते दिल्ली सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका (तीर)

प्रदर्शन में सांसदों श्री ओम बिड़ला एवं श्री अर्जुन राम मेघवाल, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की पूर्वोत्तर इकाई के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अगरवाला, दिल्ली इकाई के अध्यक्ष श्री पवनकुमार गोयनका, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री रतनलाल शाह सहित बड़ी संख्या में सम्मेलन से जुड़े लोग उपस्थित थे। दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने सक्रिय भूमिका निभाई एवं समारोह व्यवस्था में अहम योगदान किया।

दिल्ली सम्मेलन का प्रतिभा सम्मान समारोह

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन समाज के उन बच्चों को सम्मानित करना चाहता हैं जिन्होंने गत वर्ष १ अप्रैल २०१४ से ३० जून २०१५ तक निम्नलिखित सफलताएँ प्राप्त की है।

१. १०वीं एवं १२वीं की वार्षिक परीक्षा में ८५ प्रतिशत एवं अधिक अंक प्राप्त किये हों।
२. संघ लोग सेवा आयोग (UPSC) की प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त की हो या उच्च व्यावसायिक शिक्षा (जैसे एम.बी.बी.एस, एम.डी., चार्टर्ड एकाउंटेंट, एल.एल.बी., एल.एल.एम., पी.एच.डी., बी.टेक., एम. टेक., बी.ई., एम.ई., कम्पनी सेक्रेटरी) की डिग्री हासिल की हो।

अतः आप सभी से अनुरोध है कि कोई भी समाजबंधु जो कि उपरोक्त श्रेणियों में सफल हुआ है उसके बारे में सूचित करें ताकि उनसे संपर्क कर सकें। सम्मान सामूहिक रूप से एक भव्य समारोह में समाज के विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा दिया जायेगा।

प्रविष्टियाँ भेजने या अन्य किसी जानकारी के लिए सम्पर्क-सूत्रः

श्री पवन कुमार गोयनका
अध्यक्ष, दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
ए-२२, श्री अग्रसेन अपार्टमेन्ट्स, प्लॉट-१०, सेक्टर-७, द्वारका, नई दिल्ली-७५
दूरभाष : ०९३१२५०९३२९/०७८३८३८२४०७

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

निश्छल-निर्मल व्यक्तित्व के धनी थे आचार्य शास्त्री : राज्यपाल मृदुला सिन्हा

"आचार्य विष्णुकांत शास्त्री का सदैव मुस्कराता मुखमंडल, स्नेह बरसाती उनकी आँखें, आशीर्वाद प्रदान करनेवाला उनका वरदहस्त अविस्मरणीय है। वे निश्छल-निर्मल व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य शास्त्री ने बहू-बेटियों के प्रति अद्‌भुत सूत्र प्रदान किया था - बेटियों को प्यार दुलार तथा बहुओं को अधिकार।" ये उद्‌गार हैं **गोवा की महामहिम राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा** के जो उनकी कविता के अंतिम पंक्तियों के प्रश्न अत्यंत मार्मिक थे - **तिरस्कार मेरा ही क्यों/ मेरी ही अग्नि परीक्षा क्यों/ सर्वस्व त्याग की शिक्षा क्यों?**

पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर आचार्य शास्त्री के गीता-प्रवचन की प्रथम डी.वी.डी का लोकार्पण महामहिम राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला के आयोजन में मंचासीन (बायें से) डॉ. तारा दूगड़. श्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी, राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा, श्री जुगलकिशोर जैथलिया, श्री रामकृपाल सिन्हा तथा श्री मोहनलाल पारीक।

कोलकाता स्थित महाजाति सदन एनेक्सी में ३ मई २०१५ को आचार्य विष्णुकांत शास्त्री स्मृति व्याख्यान के दसवें आयोजन में बतौर मुख्य वक्ता बोल रही थीं।

'राष्ट्र के निर्माण में नारी की भूमिका' विषय पर अपने विस्तृत व्याख्यान में राज्यपाल मृदुला जी ने नारी के विविध रूपों की व्यावहारिक एवं सामयिक व्याख्या की। उन्होंने कहा कि महिलाओं की समस्या संपूर्ण समाज की समस्या है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को उद्धृत करते हुए कहा - **नारी को नारी रहने दो, देखना सिर्फ यह है कि नारी न कठपुतली बनकर जिए न तितली बनकर उड़े।** उन्होंने कहा कि नारी मन से ममता की गंगा न सूखे - इस बात पर ध्यान देना जरूरी है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में **पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी** ने कहा कि आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की आत्मा पूर्णतः शुद्ध थी। राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों को उन्होंने अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित किया। राज्यपाल के रूप में भी उन्होंने संवैधानिक मर्यादाओं का सदैव पालन किया। उनमें मानवता कूट-कूट कर भरी थी। राज्यपाल श्री त्रिपाठी ने कहा कि पुरुष-नारी की समानता नहीं हो सकती, प्रकृति के नियम को तोड़ना अनर्थ को आमंत्रण देना है। राज्यपाल जी ने नारी-केन्द्रित अपनी प्रभावी रचना सुनाकर सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

ने किया। इसे भेंट किया पुस्तकालय के मंत्री श्री महावीर बजाज ने। अतिथियों में बिहार के पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ राजनेता श्री रामकृपाल सिन्हा एवं मोहनलाल पारीक भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में श्री सत्यनारायण तिवाड़ी ने राम वंदना प्रस्तुत की। गायक ओम प्रकाश मिश्र ने आचार्य शास्त्री विरचित कविता **'तुमको क्या जादू आता है'** की सस्वर प्रस्तुति की। कार्यक्रम का संचालन किया डॉ. तारा दूगड़ ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन वरिष्ठ समाजसेवी एवं पुस्तकालय के संरक्षक जुगलकिशोर जैथलिया ने किया। अतिथियों का स्वागत श्री सरदारमल कांकरिया, डॉ. राजीव कुमार रावत तथा श्री योगेशराज उपाध्याय ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री अरुण प्रकाश मल्लावत, गिरिधर राय, नन्दकुमार लढ़ा, सत्येंद्र सिंह अटल, श्रीमोहन तिवारी, महेश चाण्डक, शलभ चतुर्वेदी आदि सक्रिय थे। समारोह में उपस्थित जनों में श्री अनिल पाण्डेय, श्री विमल लाठ, श्रीमती करुणा पाण्डेय, डॉ. अमरनाथ शर्मा, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. प्रकाश त्रिपाठी, श्री नन्दलाल शाह, श्री लक्ष्मीकान्त तिवारी, डॉ. वसुमति डागा, श्रीमती मीनादेवी पुरोहित, श्रीमती सुनीता झंवर, श्री रविप्रताप सिंह, श्री राजेन्द्र द्विवेदी, डॉ. बाबूलाल शर्मा, श्री रामानंद रस्तोगी, डॉ. पंकज साहा, डॉ. अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, डॉ. अर्चना पाण्डेय आदि उपस्थित थे। ★★★

हम भी कभी बूढ़े होंगे!

– शिव कुमार लोहिया
राष्ट्रीय महामंत्री

मनुस्मृति (२/२२७) में कहा गया है –

यं माता पितरौ क्लेशं सहेते संभेव नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्त्तुं वर्षशतैरपि।।

अर्थात् मनुष्य के पालन-पोषण के समय माता पिता जो क्लेश सहते हैं उसका बदला सौ वर्षों में भी नहीं चुकाया जा सकता।

माँ के लिये तो कहा गया है कि भगवान ने अपने सारे गुण माँ को दे दिये। महाभारत के वनपर्व में उल्लेख है कि माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है और पिता आकाश से भी ऊँचा है। वेदों में भी कहा गया है – **आत्मा वै जायते पुत्रः**। यानि व्यक्ति की आत्मा ही पुत्र के रूप में जन्म लेती है। पुत्र में व्यक्ति अपने को देखता है। राजस्थानी में भी कहावत है – **आंगली से नू कदे परे कोनी होवै**। यानि अंगुलियों से नाखून कभी अलग नहीं हो सकते। इन्हीं सब बातों को समेटे हमारे परिवार में बड़े-बुजुर्गो की अहम भूमिका रहती थी। हमारी संस्कृति में माँ-बाप का स्थान अद्वितीय है।

आधुनिकता के इस दौर में पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर बड़े होने पर बच्चे बड़ों की हिदायतों एवं सुझावों को अपनी प्रगति में बाधक समझने लगते हैं। विवाह के बाद बहू के आने पर माँ-बाप का इस ओर ध्यान रहता है कि बहू के कहने पर लड़का कहीं हाथ से निकल न जाय। उधर बहू हर बात पर यह परखने लगती है कि उसका पति अपने माँ-बाप की बातों पर कितना चलता है। मुख्यतः ऐसी स्थिति पूर्वाग्रह एवं संवादहीनता के कारण पनपती है एवं आगे बढ़ती है। उनके बच्चे हो जाने के बाद उनका सारा ध्यान अपने बच्चों के भविष्य बनाने में लग जाता है। यह कोई गुनाह नहीं है, यह तो कर्त्तव्य है। पर इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपने माँ-बाप को छोड़ दें।

घर का मुखिया जब अवकाश ग्रहण करने के करीब आता है तो उसकी चिंताएँ बढ़ जाती हैं। जीवन की उलझनों एवं संकुचित नजरिये के कारण बच्चे बुजुर्ग माता-पिता की अनदेखी करने लगते हैं। उनको समुचित सम्मान एवं न्यूनतम देखरेख से वंचित कर देते हैं।

इस प्रकार की स्थिति का घर में छोटे बच्चों पर प्रतिकूल असर पड़ता है। छोटे बच्चों के चरित्र में नकारात्मक सोच घर कर जाती है जोकि उनके जीवनयात्रा का अंग बन जाती है। इसी प्रकार की एक घटना है जिसमें एक घर में बहू अपने सास को भोजन रोज एक अलग बर्तन में दिया करती थी। घर में बच्चे इसे देखा करते थे। सास के देहांत के बाद बहू जब उन बर्तनों को घर से बाहर करने लगी तो बच्चों ने रोका – मम्मी इन बर्तनों को मत फेंको। वृद्ध होने पर तुम्हें भी इन बर्तनों में खाना है।

माँ-बाप से मात्र औपचारिक संबंध रखना आज के समाज की सबसे बड़ी त्रासदी है। इस त्रासदी का निकृष्ट रूप पाश्चात्य देशों में देखने को मिलता है। हाल ही में १० मई मदर्स डे के रूप में विश्व के ५० देशों मे मनाइ गयी। अमेरिका में इस अवसर ५० प्रतिशत से भी अधिक परिवार अपनी माताओं एवं दादियों को ग्रीटिंग कार्ड भेजते हैं। इसके द्वारा ही वे उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी एवं भावनाओं की इतिश्री मान लेते हैं। इस अवसर का पूरी तरह व्यावसायीकरण हो चुका है। अमेरिकावासी इस दिन २.७ बिलियन डालर के फूल एवं फूल स्तबक, १.५३ बिलियन डालर के उपहार एवं ६८ मिलियन डालर के ग्रीटिंग कार्ड खरीदते हैं। वहाँ पर भी इस व्यावसायीकरण का विरोध हो रहा है। अन्न जार्विस, जोकि मदर्स डे की जननी थीं, ने अपने जीवन काल में ही स्वयं इस दिन के पालन का विरोध किया था। उन्होंने कहा, – "उस व्यक्ति को जिसने विश्व में किसी भी व्यक्ति से अधिक आपके लिये किया हो, छपा हुआ कार्ड भेजना यह दर्शाता है कि आप बहुत ही आलसी है एवं हाथ से लिखना भी आवश्यक नहीं समझते। ग्रीटिंग कार्ड छापनेवाले, फूलवाले सब असाधु हैं जो मौके का फायदा उठाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ते।"

तो क्या हमारा समाज भी उसी पथ का अनुगमन करने की ओर है? क्या उसकी मंजिल मदर्स डे की चकाचौंध है? शुरुआत हो चुकी है। देश के कोने-कोने में वृद्धाश्रम खुल रहे हैं और इनमें रिक्त स्थान का अभाव है। भागवत स्वरूपा माँ को घर में प्रताड़ित करना मानवता की चरम अधोगति नहीं तो क्या है? श्रीमद्भागवत को भगवान श्रीकृष्ण का वांड्मय रूप कहा जाता है। **इसमें (१०/४५/६-७) भगवान ने कहा है – जो पुत्र सामर्थ्य रहते अपने माँ-बाप की शरीर और धन से सेवा नही करता, उसके मरने पर यमदूत उसे अपने शरीर का मांस खिलाते हैं। जो पुरुष समर्थ होकर भी बूढ़े माता-पिता, गुरु आदि का भरण-पोषण नहीं करता, वह जीता हुआ भी मुर्दे के समान है।**

आधुनिकता एवं प्रगति की अंधाधुंध दौड़ में हम यह भूल जाते हैं कि शाश्वत नैतिक मूल्यों का त्याग कर उन चीजों को हम अपनाते जा रहे हैं, जो कि भौतिक एवं नश्वर हैं एवं गीता में जिन्हें तामसिक कहा गया है। वृद्ध माता पिता की घर में उपादेयता के विषय में हम नहीं सोचते। दादी माँ के नुक्से, दादी-नानी की कहानियों का बच्चों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर जो प्रभाव पड़ता है, उसका फल बच्चों के माता-पिता को ही मिलता है न कि दादा-दादी को। **इधर बुजुर्गों को भी हमारे वर्णाश्रम धर्म में निहित संदेश का पालन करना चाहिए। वानप्रस्थ आश्रम, जोकि हमारे ग्रंथों के अनुसार ५० वर्ष की उम्र के बाद ही प्रारम्भ हो जाता है, में आते-आते बुजुर्गों को चाहिए कि वे घर की रोजमर्रा की कार्यवाही में दखलंदाजी न करें। सलाह माँगने पर अवश्य दें।** हर समय अपनी बात मनवाने की मानसिकता से दूर रहें। घर में जहाँ तक संभव हो अपनी उपयोगिता बरकरार रखने की कोशिश करें। सन्यास आश्रम में पदार्पण करते-करते बुजुर्ग आध्यात्मिक विचारधारा को अपनाते हुए पूरे परिवार को अपने प्यार एवं सद्भाव की सुरभि से भर दें। एक से अधिक संतान होने पर समदर्शी होकर पूरे परिवार के कल्याण की मनोकामना रखें। बुजुर्ग पूरे परिवार को एक सूत्र मे पिरोकर रखने वाले अदृश्य धागे के समान होते हैं। माता-पिता के आशीर्वाद की शक्ति एवं प्रभाव अतुलनीय हैं। जब तक वे रहें, उनकी सेवा-सुश्रषा एवं उनका यथोचित सम्मान परिवार के लिये अति मंगलकारी होता है। वे अपने बच्चों को सेवा कार्यों के फलस्वरूप ऐसे आशीष देते हैं जो अन्य किसी प्रकार से नहीं मिल सकता। जो संतान ज्यादा सोचने-समझने में विश्वास नहीं रखते उनके लिये इतना ही काफी है कि वे याद रखें – **हम भी कभी बूढ़े होंगे।** ★ ★ ★

मनोज जैन को पितृशोक

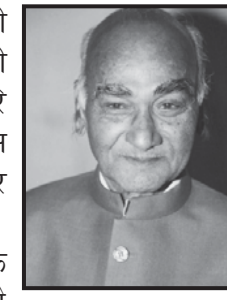

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महासचिव श्री मनोज जैन के पिताश्री हरि नारायण जैन का वैकुण्ठवास १६ अप्रैल २०१५ को बलांगीर में हो गया।

श्री हरिनारायण जैन एक सक्रिय समाजसेवी थे। वे सम्मेलन की बलांगीर जिला शाखा के अध्यक्ष, जैन समाज के अध्यक्ष एवं सिटीजेन कमिटी के सक्रिय सदस्य होने के अतिरिक्त अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार उनके निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है!

बेटी

– बृजमोहन बेरीवाला

बेटी मेरी कुछ, बड़ी हो गई है।
न चुपके से उसने, आँखों को भींचा,
न लिपटके मेरे, दिल को ही सींचा।
बहुत दिन से वो गुनगुनाई नहीं है,
बेटी मेरी कुछ, बड़ी हो गई है।

हँसती है मानो, गम कुछ छुपाती है,
न रुठती, न बात ही मनवाती है।
उलझनों में अपने, उलझ गई है,
बेटी मेरी कुछ, बड़ी हो गई है।

अपने दर्द से ज्यादा, चिंता है मेरी,
बात है करती, पर बताती नहीं है।
कुछ-कुछ, बनावटी हो गई है,
बेटी मेरी कुछ, बड़ी हो गई है।

ठहर जाते हैं बिन्दु, कोरों पे आके,
रुक जाते हैं शब्द, होठों को फड़फड़ा के।
शिकन चेहरे पे अबतक, लाई नहीं है,
बेटी मेरी कुछ, बड़ी हो गई है। ★ ★ ★

'लिव इन रिलेशन' अर्थात् 'यूज एण्ड थ्रो रिलेशन'

– प्रो. डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत

अतीत के आदिम गुफा युग, पाषाण युग, अरण्य के स्वेच्छाचारी, स्वच्छंद व अमर्यादित स्त्री-पुरुष के संबंध, अतीत के अनियंत्रित उच्छृंखल संबंधों के गलियारों से होकर संतान के पालण-पोषण, स्त्री व बच्चों की सुरक्षा, स्त्री-पुरुष संबंधों को उत्तरदायी स्थायित्व व कर्तव्य के दायरे में लाने के साथ ही दोनों की भावनात्मक सुरक्षा व संतुष्टि लाने हेतु कालांतर में विवाह व परिवार संस्थाओं का उद्‌भव हुआ। सत्य तो यह है कि विवाह केवल स्त्री-पुरुष ही नहीं, पर दो परिवारों को भी स्नेह-सूत्र में बाँधता है। जहाँ संतान की उत्पत्ति, पालन-पोषण, वंशनाम, उत्तराधिकार की भी समुचित व्यवस्था है। इसमें सामाजिक मान्य व प्रतिष्ठित रूप से उत्तरदायित्व, अधिकार व कर्तव्य के साथ ही दोनों सदस्यों स्त्री व पुरुष की आपसी निष्ठा, विश्वास, प्रेम, आदर और भावनात्मक व शारीरिक संतुष्टि, स्थायी सामाजिक मान्यता व प्रतिष्ठा प्राप्त है। वैवाहिक जीवन एक पवित्र स्थायी संबंध है, जिसमें पति-पत्नी के पारस्परिक समर्पण, निष्ठा, प्रेम, त्याग व आपसी समझ ही उसे सफल व आनंदकारी बनाते हैं। ये सभी बातें पारस्परिक अर्थात् दोनों तरफ से समान रूप से अपेक्षित है, जहाँ 'मैं' की भावना की बजाय 'हम' की भावना विकसित होती है, जो जीवन को सुखमय और सफल बनाती है।

बदलते सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिवेश में दोनों साथियों की बढ़ती हुई निजी स्वार्थी महत्वाकांक्षाएँ, व्यक्तिगत एवं भौतिक उपादानों को अधिक महत्त्व देना, कैरियरिस्ट सोच, व्यक्तिगत हितों और केवल अपनी ही प्रगति को महत्त्व देना, 'हम' की भावना के बजाय 'मैं' का विकास करना व अपने विषय में ही सोचना, पति-पत्नी में साहचर्य, सामंजस्य व आपसी 'समझ' का अभाव, परस्पर ईर्ष्या, प्रतिद्वंदिता, झगड़ा करना आदि कुछ ऐसे कारण हैं जो परिवार की नींव में घुन लगाकर कहीं मानसिक और भावनात्मक तो कहीं भौतिक रूप से परिवार बिखेरते हैं, तोड़ते हैं, दरार डालते हैं, पति-पत्नी में अवसाद, असंतोष, तनाव व मानसिक संताप को जन्म देते हैं। कुछ लोग ऐसे दुखदायी वैवाहिक जीवन से अर्थात् इन सब उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों से मुँह मोड़ कर स्वच्छंद व अनियंत्रित खुला जीवन बिताना चाहते हैं। जहाँ किसी प्रकार की कोई जिम्मेवारी नहीं, नियंत्रण नहीं, सब तरह की छूट हो। ऐसे व्यक्ति महज अपनी शारीरिक संतुष्टि हेतु विवाहेत्तर संबंधों की ओर बढ़ते हैं जो परिवार में क्लेश, असंतोष, अशांति लाकर सबको घातक चिंता व पारिवारिक विघटन की ओर ढकेलते हैं।

विवाह के एकदम उलट 'लिव इन रिलेशन' है, जिसमें स्त्री-पुरुष अपने किसी भी व्यक्तिगत कारण से बिना विवाह-संस्कार के साथ रह कर पत्नी-पति के संबंध रखते हैं। इस संबंध में स्वच्छंदता, स्वतंत्रता, उच्छृंखलता, उत्तरदायित्वहीनता तो है पर किसी प्रकार का कोई, नियंत्रण नहीं है। जब तक बने, साथ रहो नहीं तो अलग हो जाओ, एक दूसरे को छोड़ दो। ये संबंध हर प्रकार से 'फ्री' व बंधनमुक्त है, पर हर समय संबंध खतम होने की आशंका, संशय व भय बना रहता है। संबंध टूटने पर एक पक्ष अपने को ठगा हुआ, इस्तेमाल किया हुआ सदा यही समझेगा कि उसके साथ धोखा हुआ है और उसे छला गया है। उसे एक भावनात्मक पीड़ा के साथ सामाजिक प्रतिष्ठा-हानि के कलंक का लांछन ढोना ही पड़ेगा। लंबे समय के इस संबंध में अगर कोई संतान है तो उस पर जन्म से नाजायज का ठप्पा लग जाता है और वह हर कानूनी व सामाजिक अधिकार से वंचित रहता है। लंबे समय से जुड़ी 'लिव इन रिलेशन' संबंधों से अलग हुई स्त्री व उसकी संतान को भले ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने मानवीय आधार पर लगभग दो-तीन वर्ष पूर्व अपने एक फैसले में शादीशुदा स्त्री व उनसे उत्पन्न संतान को कानूनी रूप से मान्य करार दे दिया हो, पर इनके जीवन में कानूनी मान्यता के साथ भावनात्मक सुरक्षा, सुदृढ़ता, प्रेम, ममता के स्थायी संबल का नितांत अभाव है। इन संबंधों से उत्पन्न संतानों को कानूनी सुरक्षा दिलाने हेतु कौन संघर्ष करेगा, पितृत्व को नकारने वाले पुरुष का पितृत्व प्रमाणित करना कितना मुश्किल होगा, कानूनी मान्यता व अधिकार प्राप्त करने हेतु कितने ही झूठे छद्‌म गुप्त दावेदारों के प्रकट होने से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

माननीय सुप्रीम कोर्ट का मानवीय गरिमा के सम्मान को सर्वोपरि महत्त्व देते हुए दिया गया यह क्रांतिकारी निर्णय निःसंदेह सराहनीय व स्वागतयोग्य है। लेकिन एक समाजशास्त्री, समाज-वैज्ञानिक व ग्रासरूट सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते पारिवारिक न्यायालय, महिला थाना, बालक न्यायालय, महिला विकास अभिकरण, महिला सहायता समिति, महिला अत्याचार निवारण समिति, नारी निकेतन आदि के साथ एक लंबे समय तक जुड़े हुए काउंसलिंग करते हुए इस प्रकार के स्वच्छंद, व्यक्ति-केन्द्रित, अमर्यादित संबंधों से ठगी-हारी, छली गई महिलाओं की दर्दभरी टीस को मैंने करीब से देखा व महसूस किया है। इनकी संतानों को कानूनी मान्यता सुनिश्चित करने में कई रुकावटें, बाधाएँ, अड़चनें व कानूनी दाँव-पेचों की कठिनाइयाँ हैं। कौन लड़ेगा यह कानूनी लड़ाई, पितृत्व निर्धारण हेतु, डीएनए टेस्ट जैसी जटिल प्रक्रिया को कौन अंजाम देगा? यह एक लंबी व संवेदनशील कानूनी प्रक्रिया है। अभी कुछ वर्षों पहले एक नामी राजनेता ने कितनी मुश्किल से अपना डीएनए टेस्ट

कराया। जब इस टेस्ट से उनका पितृत्व साबित हो गया तो भी उन्होंने अपने पुत्र को एक लंबे समय तक सार्वजनिक तौर पर कबूल नहीं किया। इतनी लंबी कानूनी पेचदगियाँ और दीर्घ समय तक फैसले की प्रतीक्षा और उसका क्रियान्वयन कराना, कितना पैसा व समय, कानूनी कार्यवाही में बरबाद करना हर किसी पीड़िता के लिए संभव नहीं है। कोर्ट का फैसला आने तक उसका व बच्चे का भरण-पोषण, पढाई, निवास की व्यवस्था, संरक्षण-सुरक्षा का क्या प्रबंध है, आदि बातों पर सोचने व मंथन करने की आवश्यकता है।

मेरी दृष्टि में किसी विशेष परिस्थिति व विशेष पात्र की पृष्ठभूमि में मानवीय आधार पर लिया गया यह निर्णय मर्सी पेटीशन जैसी स्टेटस पर ही उचित है। इसे सार्वजनिक व सामान्य रूप से लागू करने के पूर्व निम्न बिंदुओं पर विचार, मंथन, चर्चा व स्पष्टीकरण करना अति आवश्यक है, अन्यथा उत्तरदायित्वहीन, अमर्यादित, अनियमित, स्वच्छंद, अस्थायी यह रिश्ता मर्यादित विवाह संस्था को दीमक की भांति खोखला करके समाज में व्यभिचार, स्वच्छंद जीवन व आचरण को बढ़ावा देगा। इस रिश्ते से शापित, पीड़ित, व धोखा खाई महिला इस्तेमाल की हुई, ठगी हुई, अपनी ही नजरों में गिरी हुई, सामाजिक कलंक की मार ढोती हुई, हताश, निराश, कई मानसिक उद्वेगों व रोगों, अवसाद, तनाव, संवेगात्मक अस्थिरता, साइकोसिस, न्यूरोसिस आदि की शिकार बन सकती है। अतः निम्न बिंदुओं पर विचार-मंथन, चर्चा व स्पष्टीकरण आवश्यक है –

१. लंबे समय को स्पष्ट किया जाय। संतान उत्पत्ति पर लंबे समय की लगाम नहीं होती।
२. 'लिव इन रिलेशन' में रहने वाले स्त्री-पुरुषों की न्यूनतम आयु-सीमा निश्चित की जाए।
३. क्या विवाहित स्त्री-पुरुष विवाह के समानांतर ही अन्य व्यक्ति के साथ 'लिव इन रिलेशन' बना सकेंगे? अथवा इसके पूर्व विवाह-विच्छेद होना आवश्यक होगा, अन्यथा 'लिव इन रिलेशन' व्याभिचार गिना जाए क्या?
४. 'लिव इन रिलेशन' से उत्पन्न संतान को कानूनी मान्यता व अधिकार लेने हेतु क्या प्रमाण जुटाने होंगे, क्या 'प्रूव' करना होगा? पितृत्व प्रूव करने हेतु डीएनए टेस्ट की प्रक्रिया व अन्य माकूल सबूत जुटाना आदि कानूनी अड़चनों पर भी विचार व खुलासा किया जाय। कौन लड़ेगा यह जटिल कानूनी लड़ाई?
५. आशंका यह भी है कि पिता व दादा की संपत्ति में भागीदारी हेतु कई 'हिडन' व 'फाल्स' दावेदार सामने आ सकते हैं।
६. कानूनी लड़ाई सामान्यतया दीर्घकालिक व जटिल होती है। इसका लाभ संतान को कब मिलेगा और उसके लिए कौन लड़ेगा?
७. दोनों साथियों में से संतान का दायित्व, संरक्षकत्व कौन उठाएगा? कानूनी मान्यता के अलावा संतान को स्नेहिल ममत्व भरे अपनत्व की उचित देखभाल व संस्कारित बनाने का 'कंगारू केयर' परिवेश कौन देगा।
८. बालक को भावनात्मक सुरक्षा, संबल व स्थायित्व चाहिए, वह कौन देगा?
९. दोनों पक्षों – स्त्री व पुरुष द्वारा बच्चे को नकारे जाने पर संतान का क्या भविष्य होगा? उसके पालन-पोषण व शिक्षा की क्या व्यवस्था होगी?

इस विश्लेषण के पश्चात् यही निष्कर्ष निकलता है कि 'लिव इन रिलेशन' विवाह संस्था में लगा घुन है जो अमानवीय, अनैतिक, भ्रष्ट व स्वच्छंद, अनियंत्रित व उत्तरदायित्वहीन जीवन से समाज में पारिवारिक विघटन को जन्म देगा। ★★★

समाचार-सार

२१ मई २०१५ : महाराणा प्रताप जयन्ती के अवसर पर कोलकाता में शेक्सपीयर सरणी-लाउडन स्ट्रीट मोड़ स्थित महाराणा प्रताप उद्यान में महाराणा की प्रतिमा को माल्यार्पण – (बायें से दायें) सर्वश्री शिव कुमार लोहिया, रामअवतार पोद्दार एवं प्रह्लाद राय अगरवाला।

एक ही छत के नीचे हो अब सब धर्मों की प्रार्थना!

– डॉ. जगदीश गांधी

१. **एक ही छत के नीचे हो अब सब धर्मों की प्रार्थना :** अब समय आ गया है जब सभी धर्मों के लोगों को एक ही स्थान पर एकत्रित होकर एक ही परमपिता परमात्मा की प्रार्थना करनी चाहिए। अज्ञानता के कारण आज एक ही परमपिता परमात्मा की ओर से युग-युग में आये अवतारों को अलग-अलग मानने के कारण ही धर्म के नाम पर चारों ओर जमकर दूरियाँ बढ़ रही हैं, जबकि सभी अवतार एक ही परमपिता परमात्मा की ओर से युग-युग में आये हैं। इस प्रकार हम सब एक ही परमात्मा की संतानें हैं। लैटिन भाषा में रिलीजन के मायने जोड़ना होता है। अर्थात जो जोड़े वह धर्म है तथा जो तोड़े वह अधर्म है।

२. **तुलसीदास जी ने रामायण में लिखा है :** रामायण में तुलसीदास जी ने ठीक ही लिखा है कि **'जब जब होई धर्म की हानी – बाढ़हि असुर, अधम अभिमानी। तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा - हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।** अर्थात जब-जब धर्म की हानि होती है और संसार में असुर, अधर्मी एवं अन्यायी प्रवृत्तियों के लोगों की संख्या सज्जनों की तुलना में बढ़ जाने के कारण धरती का संतुलन बिगड़ जाता है। तब-तब परमपिता परमात्मा कृपा करके धरती पर अपने प्रतिनिधियों (अवतारों) **कृष्ण, बुद्ध, अब्राहीम, मुसा, महावीर, जरस्थु, ईसा, मोहम्मद, नानक, बहाउल्लाह** आदि को मानवता का मार्गदर्शन कर समाज को सुव्यवस्थित करने के लिए युग-युग में विविध रूपों में भेजते रहे हैं।

३. **सभी अवतारों को दिव्य ज्ञान एक ही परमात्मा से प्राप्त हुआ है :** युग-युग में आये इन सभी अवतारों को दिव्य ज्ञान एक ही परमपिता परमात्मा से प्राप्त हुआ है। उदाहरण के लिए परमपिता परमात्मा ने ५००० वर्ष पूर्व कृष्ण की आत्मा में गीता के माध्यम से **'न्याय'** का दिव्य ज्ञान भेजा। पुनः २५०० वर्ष पूर्व उसी परमपिता परमात्मा ने भगवान बुद्ध की आत्मा में त्रिपटक के माध्यम से **'सम्यक ज्ञान'** व **समता** का दिव्य ज्ञान भेजा। २००० वर्ष पूर्व उसी परमपिता परमात्मा ने कठोर मानव जीवन को **करुणामय जीवन** बनाने के लिए प्रभु ईसा मसीह की आत्मा में बाइबिल का ज्ञान भेजा। १४०० वर्ष पूर्व उसी परमपिता परमात्मा ने हज़रत मोहम्मद की आत्मा में कुरान के माध्यम से **'भाईचारे'** का दिव्य ज्ञान भेजा। ५०० वर्ष पूर्व उसी परमपिता परमात्मा ने स्वार्थपूर्ण मानव जीवन का त्याग (सच्चा सौदा) का पाठ पढ़ाने के लिए गुरु नानक देव जी की आत्मा में गुरूग्रंथ साहिब के माध्यम से **'त्याग'** का दिव्य ज्ञान भेजा तथा लगभग २०० वर्ष पूर्व उसी परमात्मा ने **मानव जीवन में बढ़ती हुई दूरियों को समाप्त कर एकता का पाठ मानव जाति को पढ़ाने के लिए** बहाउल्लाह की आत्मा में किताबे अकदस का ज्ञान भेजा।

४. **प्रार्थना कहीं भी करें सुनने वाला ईश्वर एक ही है :** आत्म पुत्र होने के कारण हम सब एक ही परमपिता परमात्मा की संतान हैं। उस परमपिता परमात्मा की प्रार्थना हम मंदिर में करें, मस्जिद में करें, गिरजाधर में करें या गुरूद्वारे में करें, और चाहे किसी भी भाषा में करें, हमारी प्रार्थनाओं को सुनने वाला ईश्वर एक ही है। **अलग-अलग स्थानों, भाषाओं, वेश-भूषाओं में परमपिता परमात्मा को याद करने से धरती पर यह अज्ञान फैल गया है कि धर्म एक नहीं अनेक हैं।** परमपिता परमात्मा की प्रार्थना करने के लिए किसी विशेष प्रकार की वेश-भूषा, भाषा, जाति-धर्म, स्थान आदि से कोई लेना-देना नहीं है।

५. **परमात्मा का धर्म और प्राणी का धर्म एक ही होता है:** गीता में जब भगवान श्रीकृष्ण से उनके शिष्य अर्जुन ने पूछा कि भगवान! आपका धर्म क्या है? भगवान श्रीकृष्ण ने अपने शिष्य अर्जुन को बताया कि मैं सारी सृष्टि का सृजनहार हूँ। इसलिए मैं सारी सृष्टि के सभी प्राणियों से बिना किसी भेदभाव के प्रेम करता हूँ। इस प्रकार मेरा धर्म अर्थात कर्तव्य सारी सृष्टि के प्राणी मात्र से प्रेम करना है। इसके बाद अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा कि भगवन् मेरा धर्म क्या है? **भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन**

से कहा कि तुम मेरी आत्मा के पुत्र हो। इसलिए मेरा जो धर्म अर्थात कर्तव्य है वही तुम्हारा भी धर्म अर्थात कर्तव्य है। अतः सारी मानव जाति की भलाई करना ही तुम्हारा भी धर्म अर्थात् कर्तव्य है। भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि इस प्रकार तेरा और मेरा दोनों का धर्म एक ही है।

६. **धर्म शाश्वत है एवं अपरिवर्तनीय है :**

इस प्रकार परमपिता परमात्मा की ओर से युग-युग में आये किसी भी महान अवतार ने कोई अलग धर्म नहीं दिया है। **जिस प्रकार से परमपिता परमात्मा शाश्वत और अपरिवर्तनीय है उसी प्रकार से उसका धर्म भी शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।** परमपिता परमात्मा का जो धर्म है वही धर्म उसकी सभी संतानों का भी धर्म है। **मनुष्य का सदैव से एक ही धर्म (कर्तव्य) रहा है - प्रभु-इच्छाओं को जानना तथा उन पर चलना।** पवित्र पुस्तकों गीता, त्रिपटक, बाईबिल, कुरान, गुरूग्रन्थ साहिब, किताबे अकदस आदि में एक ही परमपिता परमात्मा के द्वारा भेजी गई **न्याय, समता, करूणा, भाईचारा, त्याग एवं हृदयों की एकता** की शिक्षाओं को जानना तथा उसके अनुसार संसार में रहकर पवित्र भावना से प्रभु की इच्छाओं और आज्ञाओं के अनुसार कार्य करना ही हर प्राणी का धर्म है। इस प्रकार प्रभु की इच्छाओं को जानकर तथा उनके अनुसार कार्य करने के अलावा किसी भी प्राणी का और कोई भी दूसरा धर्म नहीं है।

७. **धर्मों के बीच बढ़ती हुई दूरियों का कारण धर्म के प्रति मानव का अज्ञान है :**

आज धर्म के नाम पर बढ़ती हुई दूरियाँ सिर्फ अज्ञानता के कारण हैं। जबकि सभी धर्मों का उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जाति के हृदय में प्रेम व एकता की भावना को बढ़ाकर सारी पृथ्वी पर आध्यात्मिक सभ्यता की स्थापना करना है। सभी धर्मों का स्रोत एक ही परमपिता परमात्मा है और हम सब एक ही परमपिता परमात्मा की संतान है। धर्म के नाम पर होने वाली दूरियों का कारण धर्म के प्रति लोगों का अज्ञान है। **जब हम सभी एक ही परमात्मा की संतानें हैं तो हमारे धर्म अलग-अलग कैसे हो सकते हैं?** इसलिए स्कूलों में बच्चों एवं शिक्षकों के द्वारा की जाने वाली सामूहिक प्रार्थना की तरह ही **समाज में भी सभी धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों के लोगों को एक ही जगह पर इकट्ठे होकर सामूहिक रूप से एक ही परमपिता परमात्मा की प्रार्थना करनी चाहिए और यही प्रभु-प्रार्थना करने का सबसे सही तरीका भी है।** ★ ★ ★

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा 'स्पेशल सेशन' का आयोजन

आज की इस भागमभाग एवं प्रतियोगिता के जमाने में आदमी का जीवन इतना व्यस्त एवं तनावपूर्ण हो गया है कि ना तो उसे अपने स्वास्थ्य की सुध रही है और ना ही वो अपने रिश्तों के प्रति जागरूक रह पाता है। इसका नतीजा यह है कि हम तरह-तरह की बीमारियों से घिरते जा रहे हैं एवं आपसी सम्बन्धों में भी निरसता सी आती जा रही है, फिर वो संबंध चाहे माँ-बाप के साथ, बच्चों के साथ हो, पति-पत्नी हो, बहन-भाई का हो, दोस्तों के साथ हो।

इन समस्याओं के समाधान पर चर्चा हेतु दिल्ली प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन प्रसिद्ध प्रोफेशनल मोटिवेटर डॉ. शंकर गोयनका द्वारा एक 'स्पेशल सेशन' आयोजित करने जा रही है। सेशन में अधिक से अधिक २० जोड़ों (पति-पत्नी) को शामिल किया जा सकता है। प्रोग्राम ९० मिनट का होगा जिसमें २० जोड़ों की राउंड टेबल मिटिंग करवाई जाएगी एवं समस्याओं के समाधान का तरीका बताया जायेगा। प्रोग्राम का दिन, स्थान एवं समय यथासमय सूचित किया जाएगा।

'पहले आये पहले पाये' के आधार पर रजिस्ट्रेशन किया जाएगा। रजिस्ट्रेशन के लिए **पवन कुमार गोयनका (मो. ९३१२५०९३२९), राजकुमार मिश्रा (मो. ९३१३९९४५०१), राजेश जलान (मो. ९८११२८६३२९) या शशी खेमका (मो. ९८१०४२४८८८)** से सम्पर्क किया जा सकता है।

एक विचार

आपको कोई अच्छा
इंजीनियर मिले
तो बताना,

मुझे इंसान से इंसान
को जोड़ने वाला पुल
बनाना है

बहते आंसुओ को रोकने
वाला बांध बनाना है

और सच्चे संबंधो में पड़ती
दरारो को भरवाना है

(संकलन : शिव कुमार लोहिया)

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक : भारतीय राजनीतिक दलों में फूट का एक सर्वेक्षण

● लेखक : प्रो. (डॉ.) शिवबालक प्रसाद

प्रकाशक : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली - ११०००२

पृष्ठ : ३५२ ● मूल्य : १,२०० रुपये

भारतीय राजनीतिक दलों में फूट का एक सर्वेक्षण नामक पुस्तक सन् १८८५ से १९७७ तक भारतीय राजनीतिक दलों के मतभेद एवं मनभेद का विस्तृत विश्लेषण करने की कोशिश है। इसमें जिन बातों की चर्चा की गई है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि न केवल भारतीय नागरिकों के व्यक्तिगत गुणों, चारित्रिक विशेषताओं बल्कि बहुआयामी सामाजिक विचारधाराओं का भी विश्लेषण किया गया है।

इस प्रकार के फेरबदल देश के सामने कई प्रश्न उठा देते हैं, जिसका हल देश की प्रगति के लिए आवश्यक हो जाता है। भारत में प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस रहा है जिसमें टूट-फूट स्वतंत्रता के पहले एवं बाद में कई बार उभरे हैं। अन्य प्रमुख दल भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। कुछ ऐसे दल रहे हैं जो टूट-फूट की स्थिति से आक्रांत हो गए। कुछ ऐसे भी उदाहरण मिलते है जहाँ फूट के बाद दल की लोकप्रियता बढ़ गई। तालिकाओं के माध्यम से विभिन्न दलों की संगठनात्मक तथा संसद तथा विभिन्न राज्य विधानसभा में सदस्यों की संख्या दी गई है। विस्तृत संदर्भ सूची में इस अध्ययन के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए समाचार पत्रों-पत्रिकाओं एवं विभिन्न दलों के प्रस्ताओं एवं प्रकाशनों को भी उद्धृत किया गया है। इस कारण पुस्तक की उपादेयता एवं प्रामाणिकता में वृद्धि होती है।

पुस्तक के लेखक प्रो. (डॉ.) शिवबालक प्रसाद हैं जो गोल्ड मेडलिस्ट एम.ए हैं। वे बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय के राजनीतिक विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। इस पुस्तक में मुख्यतः अखिल भारतीय कांग्रेस, साम्यवादी दल, कांग्रेस सोशलिस्ट दल, लोकदल एवं जनता पार्टी को अध्ययन में शामिल किया गया है। सबसे पहली राजनीतिक फूट सन् १९०७ में भारतीय कांग्रेस में हुई थी जिसमें गरम दल एवं नरम दल दो भागों में बँट गया था। लेखक ने पुस्तक में एक प्रासंगिक बात उठाई जब उन्होंने कहा, "भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा अभिशाप यह रहा है कि यहाँ सदा से एक सशक्त विरोधी दल का अभाव रहा है।"

सत्तादल के साथ-साथ विपक्षी दल भी फूट के साथ बिखरे हैं। लेखक का यह निष्कर्ष समीचीन प्रतीत होता है।

अंत में जब हम राष्ट्रीय राजनीति की सभी पहलुओं पर दृष्टिपात करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि राष्ट्रीय राजनीति और दलों में जो टूट-फूट की लम्बी प्रक्रिया अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना से हुई थी, आजतक किसी न किसी रूप में कायम है। साथ ही, इसके द्वारा न तो शुद्ध विचारधारा का सूत्रपात किया गया है और न इस दल से संबंधित कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व में निखार लाने के लिए उनके व्यक्तिगत या सामूहिक गुणों का ही विकास किया गया है। आज संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था दिग्भ्रमित होकर एक निश्चित मार्ग को खोज रही है।

राजनीति शास्त्र के अध्ययन करने वालों एवं राजनैतिक दलों के संबंध में जानकारी के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। ★ ★ ★

Shaping

a greener tomorrow

Accountability to the future generation

S. R. RUNGTA GROUP

Cares for the land and its people

MINING, STEEL & POWER

Rungta House, Chaibasa, Jharkhand - 833201

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2013-2015
Date of Publication - 30th May 2015
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
(2nd Floor) Kolkata - 700 007
Telefax : (033) 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com